



झारखंड की सात सीटों पर प्रत्याशी चुनने में छूटेंगे भाजपा के पसीने

- पाकुड़, जामा, बाघमारा, मधुपुर, नाला, सिंदरी और सिमडेगा में होगा झकझूमर
- इन सीटों पर उम्मीदवार बदलने का पड़ रहा दबाव, इसलिए पसोपेश में भाजपा

झारखंड में इस बार का विधानसभा चुनाव दोनों ही गठबंधनों से जासा है। वैसे तो किसी भी राजनीतिक दल या गठबंधन के लिए हर चुनाव बेहद महत्वपूर्ण होता है। लेकिन झारखंड विधानसभा का चुनाव खास इसलिए है, क्योंकि यहाँ की राजनीति ने 2019 के बाद से कई कार्रवाई बदली है। 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में राज्य की 14 में से 12 सीटें जीत कर भाजपा-आजसू ने अपना प्रचम लहराया था, लेकिन छह माह बाद हुई विधानसभा चुनाव में इन दोनों दलों की बुरी तरह पराजय हुई, जबकि झामुगो-कांग्रेस-राजद

के गठबंधन ने सत्ता हासिल कर ली। इसके बाद हाल में हुए लोकसभा चुनाव में भी भाजपा को राज्य में अपेक्षित सफलता नहीं मिली। झारखंड को कभी आजें सीटों पर प्रत्याशी देनी, यह चुनाव बेहद चुनावीपूर्ण है। झारखंड में विधानसभा की 81 सीटें हैं। भाजपा इनमें से कितनी सीटों पर प्रत्याशी देनी, यह अब तक तय नहीं है, लेकिन कुछ ऐसी सीटों की पहचान की

गयी है, जहां पार्टी के लिए उम्मीदवार चयन का काम काफी चुनावीपूर्ण होगा। ऐसी कम से कम सात सीटें हैं, जहां भाजपा को प्रत्याशी चयन में फूंक-फूंक कर कदम रखना पड़ेगा। इन सीटों के प्रत्याशी चयन में अगर किसी के दबाव में विक्षिप्त हो जायेगा। इनमें चार सीट संघात की हैं, जबकि दो कोयलांचल और एक दक्षिणी छाटानागपुर की। क्या है इन सीटों पर भाजपा के लिए प्रत्याशी चयन में मुश्किल और क्या है सकता है इसका परिणाम, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राफेश रिंग।



प्रत्याशी बदलना जरूरी होगा। पाकुड़ में आधा दर्जन दावेदार

शुरूआत करते हैं पाकुड़ से। यह सीट फिलहाल कांग्रेस के पास है। पिछले चुनाव में कांग्रेस के अलमगीर आलम ने भाजपा के वेणी प्रसाद गुरुता को 65 हजार से अधिक वोटों के अंतर से हराया था। इस बार पाकुड़ से भाजपा के टिकट के दावेदारों में वेणी प्रसाद गुरुता के अलावा मुकेश शुक्ला, बाबूधान मुर्मू, अनुग्रहित प्रसाद साहू और मीरा पांडेय शामिल हैं। इन सभी का इलाके में अलग-अलग असर है और इनकी दावेदारी के पीछे अलग-अलग कार्रवाई भी है। उम्मीदवार चयन करते समय भाजपा को स्थानीय कार्यकर्ताओं से भी फौटोंक लेना जरूरी होगा।

जामा में सुरेश मुर्मू है खात्री दावेदार

जामा सीट अभी खाली है। पिछले चुनाव में यहाँ से झामुगो के टिकट पर सीट सेरेन जीती थीं। उन्होंने भाजपा के सुरेश मुर्मू को कीरीब डेंड हजार रुपयों की बात अपने स्तर के लिए लगायी थी। और वर्षाने के लिए बेहद अहम है, इसलिए प्रत्याशी चयन के स्तर से ही वह अतिरिक्त सतर्कता बरत रही है। पार्टी के चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान और प्रधान विमांत विस्वासराम के लिए बेहद अहम है, यहाँ भाजपा के लिए बेहद असर है और इनकी दावेदारी की स्थानीय सतर्कता से इन्होंने अपने लगे हैं। और विधिन राजनीतिक दावेदारों की स्थिति का आकलन कर रहे हैं।

चूंकि यह चुनाव भाजपा के लिए बेहद अहम है, इसलिए प्रत्याशी चयन के स्तर से ही वह अतिरिक्त सतर्कता बरत रही है। पार्टी के चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान और प्रधान विमांत विस्वासराम के लिए बेहद अहम है, यहाँ भाजपा के लिए बेहद असर है और इनकी दावेदारी की स्थानीय सतर्कता से इन्होंने अपने लगे हैं। और विधिन राजनीतिक दावेदारों की स्थिति का आकलन कर रहे हैं।



भाजपा चुनाव में कार्यकर्ताओं की पसंद सुरेश मुर्मू या सीटों सेरेन की पसंद जवाही सीटों से किसे चुनती है, यह देखेवाली बात होगी।

मधुपुर में गंगा की जगह राज पालिवार की पकड़ ज्यादा

भाजपा के लिए सिरदर्द बनी संघात की तीसरी सीट मधुपुर है, जहां 2019 में झामुगो के हाजी हुसैन अंसरी जीते थे। उन्होंने भाजपा के राज पालिवार को 23 हजार वोटों के अंतर से हराया था। कोरोना में उनके निधन के बाद 2021 में हुए उप चुनाव में झामुगो ने उनके पुत्र प्रभान्तु हसन को इलाके में अपना प्रधान बना दिया। लेकिन उतारा, जबकि भाजपा ने प्रत्याशी की बाबूल को हराया था।

उनका अधिकांश समय क्षेत्र की बजाय कारोबार के सिलसिले में गोवा में बीतता है। इससे स्थानीय कार्यकर्ता निराश हैं। अब देखना चाहते हैं कि यहाँ भाजपा किसी के दबाव में राज पालिवार का टिकट काटती है, या कार्यकर्ताओं की पसंद को तरीके देती है।

नाला में बाबूल की लोकप्रियता सबसे अधिक

जहां तक नाला विधानसभा सीट का सवाल है, तो यह सीट 2019 में रवींद्र नाथ महतो ने करीब साढ़े तीन हजार वोटों के अंतर से जीती थी। उन्होंने भाजपा के सत्त्वांकन द्वारा बाबूल को हराया था।

इस बार इस सीट पर भाजपा के कई नेता जोर लगा रहे हैं। उन्होंने कुछ हृद तक बाबूल को हासिले पर भी धकेल दिया है। अब देखना चाहते हैं कि कुछ कर्मियों के बाबूल बाबूल की लोकप्रियता औरों की बनिस्वत अधिक है।

बाबूल में दुल्लू की पली और पुत्र भी दावेदार

अब आते हैं कोयलांचल की बाबूल सीट पर, जहां 2019 में भाजपा के दुल्लू महतो के उत्तरांद नाथ महतो ने कांग्रेस के जलेश्वर महतो को महज आठ से कुछ अधिक वोटों के अंतर से हराया था। इस बार के उत्तरांद नाथ महतो की बाबूल को हराया था।

सिंदरी में इंद्रजीत महतो की पली की दावेदारी

कोयलांचल की दूसरी सीट सिंदरी है, जहां भाजपा के समने प्रत्याशी चुने की चुनावी है। 2019 में वहाँ से भाजपा के इंद्रजीत महतो ने मासस के आनंद महतो को सात हजार वोटों के अंतर से हराया था। चुनाव जीतने के बाद इंद्रजीत महतो कोरोना काल में वीमार पड़ गये और पिछले दो साल से अधिक समय से इलाजरत हैं। इस बीच उनके साथ एक और हादसा हुआ। पिछले साल उनके 27 वर्षीय पुत्र विवेक ने आत्महत्या कर ली। इसके बावजूद परिवार आज भी भाजपा के साथ मजबूती से जुड़ा हुआ है। इस बार इंद्रजीत महतो की पली तारा देवी अपने पति के स्थान पर टिकट की दावेदारी कर रही है। उनके साथ जनता की सहानुभूति भी देखी जा रही है। हालांकि वहाँ से कोयलांचल की दावेदारी कर रही है।

सिमडेगा से श्रद्धानन्द बेसरा की दावेदारी सबसे मजबूत

अब बात दूसरी छाटानागपुर की सिमडेगा विधानसभा सीट की, जहां से 2019 में कांग्रेस के भूषण बाड़ा ने जीत लाई। इससे सीट पर जदयू की भी नजर नहीं है। इसके बावजूद परिवार आज भी भाजपा के साथ चार वोटों के अंतर पर मजबूती से जुड़ा हुआ है। इसके बावजूद परिवार बाबूल की लोकप्रियता के साथ चार वोटों के अंतर पर मजबूती से जुड़ा हुआ है। इसके बावजूद परिवार बाबूल की लोकप्रियता के साथ चार वोटों के अंतर पर मजबूती से जुड़ा हुआ है। इसके बावजूद परिवार बाबूल की लोकप्रियता के साथ चार वोटों के अंतर पर मजबूती से जुड़ा हुआ है। इसके बावजूद परिवार बाबूल की लोकप्रियता के साथ चार वोटों के अंतर पर मजबूती से जुड़ा हुआ है।

ओडिशा से सिमडेगा के रास्ते रांची लाये जा रहे गोवंशीय मवेशी बरामद, अंतरराज्यीय गिरोह के आठ तस्कर गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता रांची। सिमडेगा लुपिस ने बनडेगा-ओडिशा के गर्व से गोवंशीय पशु को बरामद कर लिया है। वहाँ तस्करी से जुड़े इंटर स्टेट पिरोह के आठ तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपी में गुलाम जिले के प्रिसिस के सिसारी थाना क्षेत्र रिश्त युग्म निवासी अजमेर भंडारी, इरशाद राई, इकरामपुर हक, शाकिर मीर, आजाद खान, छाटानागपुर के जशपुर जिले के लोदाम थाना क्षेत्र के साइट टांगरटोली निवासी परवेज खान, शमीम बरखा और अशुद्धला शामिल हैं। अरोपियों के पास से गोवंशीय पशुओं को बरामद कर लिया गया है। जिसके बाद गोवंशीय पशुओं को बरामद कर लिया गया है।

पुलिस के अनुसार बनडेगा के रास्ते कुछ पशु तस्करों द्वारा अवैध

रूप से कुछ गोवंशीय पशुओं को रांची ले जाया जा रहा है। सूचना पर छापामरी दल का गठन कर मौके पर भेजा गया। आठ पशु तस्करों को चार गोवंशीय पशुओं को बरामद किया गया है। अत्यंत यथा तस्करों को चार गोवंशीय पशुओं को बरामद किया गया है। अत्यंत यथा तस्करों को चार गोवंशीय पशुओं को बरामद किया गया है।

रूप से कुछ गोवंशीय पशुओं को रांची ले जाया जा रहा है। सूचना पर छापामरी दल का गठन कर मौके पर भेजा गया। आठ पशु तस्करों को चार गोवंशीय पशुओं को बरामद किया गया है। अत्यंत यथा तस्करों को चार गोवंशीय पशुओं को बरामद किया गया है।

सरयू राय अब नीतीश के साथ चलायेंगे तीर जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष ने दिलायी सदस्यता

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। रांची। झारखण्ड की चर्चित शिक्षियत और जमशेदपुर राय के निर्दलीय विधायक सरयू राय ने जदयू का दामन थाम लिया है और अब वह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ आ चुके हैं। जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद संजय झा ने रविवार को उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलायी। सरयू राय के जदयू ज्याइन करने के बाद जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने सोशल मीडिया पर लिखा कि जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ श्री राय का पिछले कई दशकों से व्यक्तिगत संबंध रहा है। मुझे विश्वास है कि उनके आने से झारखण्ड में पार्टी को मजबूती मिलेगी। इस मौके पर बिहार सरकार और जदयू के झारखण्ड प्रदेश प्रभारी अशोक चौधरी, मंत्री श्रवण कुमार, राज्यसभा सांसद सह



भाजपा से जुड़े रहे। वह 2014 से 2019 तक झारखण्ड में रघुवर दास के नेतृत्व वाली भाजपा मनीष कुमार मौजूद थे। सरयू राय बिहार और झारखण्ड की राजनीति में चर्चित है। इस दौरान कई मुहूर्तों पर तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास से मतभेद के चलते जब भाजपा 2019 में उन्हें टिकट देने से इनकार कर दिया, तो उन्होंने पार्टी को अंजाम तक पहुंचाने वाले सरयू राय 2019 तक

और रघुवर दास के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ा। उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री को हराया था। अब जब राज्य 2024 के विधानसभा चुनाव की दहलीज पर है, तो सरयू राय जदयू से हाथ घुहचिंता कर्त्ता राजनीति को आगे बढ़ावा देते हैं। इसके लिए वह नीतीश कुमार का हर आदेश को मानने को तैयार है।

बंगाल में बाढ़ के लिए ममता ने झारखण्ड को ठहराया जिम्मेदार, तो बोले हिमंता, मैं नहीं मानता

आजाद सिपाही संवाददाता



बंगाल में आयी बाढ़ के लिए झारखण्ड सरकार जिम्मेदार नहीं: हिमंता विख्यात सरमा

ममता बनर्जी को जवाब देते हुए दिमता विख्यात सरमा ने लिखा है कि मैं दीदी का सम्मान करता हूं, लेकिन मैं उनकी इस धारणा के स्वीकर नहीं कर सकता कि झारखण्ड सरकार पश्चिम बंगाल में आयी बाढ़ के लिए जिम्मेदार है। दोनों सरकारों को लोगों की कठिनाइयों को कम करने के लिए मिल कर काम करना चाहिए। इस साल, अस्साचल और भूटान पहाड़ियों से अनेकों पानी असम में बाढ़ का कारण बनता है। हालांकि, हम अस्साचल सरकार या यैंयैल भूटान सरकार को दोनों नहीं देते, क्योंकि हम समझते हैं कि पानी की कोई सीमा नहीं होती। यह स्वाचारिक रूप से नीचे की ओर बहता है।

झारखण्ड का पानी बंगाल में बाढ़ है। मैंने उनसे अनुरोध किया कि कृपया इस बात का ध्यान रखें।

झारखण्ड का पानी बंगाल में बाढ़ है। मैंने उनसे कहा कि ला रहा है और वह मानव निर्मित कृपया इस बात का ध्यान रखें।

रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ की सामाजिक पहल सर्दियों में जरूरतमंदों को उपलब्ध करायेंगे गर्म कपड़े

लोगों से इस मुहिम में आगे आने की अपील



राज्य सरकार का अपराधियों को है खुला संरक्षण

केंद्रीय राज्य मंत्री में राज्य सरकार की भी आई हाथों द्वारा। लोगों और ऑर्डर के मुद्दे पर कहा कि यह कैसा शहर है, जहां पत्रकारों पर भी हमले हो रहे हैं। वकील की हात्या हो रही है। समाज को सरकार देने की विधियां भी सुरक्षित नहीं हैं। यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि राज्य की सरकार का अपराधियों को खुला संरक्षण प्राप्त है।

झारखण्ड, कोंग्रेस और राजद के बीच विधायियों के गठबंधन से चल रही सरकार के अपराधियों को खुली छूट दे रखी है।

इसलिए अपराध का ग्राफ

लगानीर बढ़ाता जा रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि जिस

राजधानी में मुख्यमंत्री रहते हैं।

सरकार के सभी मंत्री रहते हैं।

वहां दिनदहारे वादात हो जा रही है।

जब दरोगा और वकील

सुरक्षित नहीं हैं, तो हम सहज

कल्पना कर सकते हैं कि इस

राज्य में कौन सुरक्षित है।

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राजनीति के साथ सामाजिक कार्यों के प्रति भी हमेशा सजग रहने वाले रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने पहल की है। श्री सेठ ने सर्दियों में जरूरतमंदों के लिए ऊपर बैंक खोलने की घोषणा की। इसके लिए केंद्रीय कार्यालय में संसद ने पत्रकारों से बात की। कहा गया है कि उनके ठंडे में एक बड़ी बाढ़ आ रही है। अब समाज से एक बार किया गया है कि उनके ठंडे में एक बड़ी बाढ़ आ रही है। ऐसे बच्चे, महिलाएं, बुजर्ग सभी वर्ग के लोग इस समस्या से रू-ब-रू होते हैं। केंद्रीय मंत्री ने रांची के नारायणों से आहार किया कि आपके घर में पुराने परतु अच्छी स्थिति में जो गर्म कपड़े पड़े हैं, जिनका उपयोग करते हैं। उनको जान ले लेते हैं। ऐसे बच्चे, महिलाएं, बुजर्ग सभी वर्ग के लोग इस समस्या से रू-ब-रू होते हैं। केंद्रीय कार्यालय में जन्म करें।

रांची में जल जमाव पर कहा कि यह सरकार सिर्फ और सिर्फ जनता को घोषा देने का काम कर रही है। पिछले वर्ष भी जलजमाव की जनता से तीन लाख से अधिक पुरुषों बांट सके। टॉय बैंक के माध्यम से 70 हजार से अधिक खिलौने का

हम की बैठक में झारखण्ड पर फोकस, संगठन मजबूती पर चर्चा



कार्यकर्ताओं से की गयी वन-टू-वन रायशुमारी केरल की लेबर पार्टी का हम में विलय

आजाद सिपाही संवाददाता रांची। हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक श्री जीतन राम माझी द्वारा दिलायी गई थी। जीतन राम माझी ने कहा कि हम पार्टी के गरीबों, मजदूरों और वर्चितों को उम्मीदें हैं। पार्टी विहार-झारखण्ड समेत अन्य राज्यों में संगठन विस्तार पर फोकस रखते हैं। रविवार को चाराय होटल में बिहार-झारखण्ड, केरल, दमन, तमिलनाडु, पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, तेलंगाना, असम सहित कई संगठन देश भर में गरीब, वर्चित और आप लोगों के हक की लड़ाई लड़ेगी और उनकी आवाज बनेगी।

संतोष कुमार सुमन ने कहा कि जल्द झारखण्ड की पार्टी इकाई का विस्तार होगा। राज्य के दलित-आदिवासी और गरीबों की लड़ाई लड़नी है। कार्यकर्ता ही पार्टी की जातन है।

इसमें केंद्रीय मंत्री जीतन राम माझी और राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित रामदास डॉ के जुटान हुआ।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा देने की ओर आया।

इसके बाद जब भाजपा के लिए बड़ा कांड आया तो आगे बढ़ावा

संपादकीय

गडकरी ने की राहत देने की बात

के द्वारा संदर्भ परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने 27 जून को हाइके पर यात्रा करने वाले लोगों की परेशनियों को देखते हुए और देकर कहा कि यह संदर्भ अच्छी हालत में नहीं है, तो राजमार्ग एवं सेवोंसे को टोल नहीं लगाना चाहिए। टोल तभी वसूला जाना चाहिए, जब बेहतरीन गुणवत्ता वाली सड़कें प्रदान की जाएं। गंगें और कीचड़ वाली घटिया सड़कों के लिए भी टोल वसूलने से जनता में अक्रोश पैदा हो सकता है और आपको लोगों की प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ सकता है। इसके बाद 28 जुलाई को नितिन गडकरी ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को एक प्रस्तुति दिखायी कि जीवन और चिकित्सा बीमा प्रीमियम पर जीएसटी हटाने की मांग की है, जो इस समय 18 प्रतिशत है। इस पत्र में श्री गडकरी ने बताया है कि हाल ही में नागरुक डिजिटल लाइफ इंजिनियरिंग कार्यालय यूनिवर्सिटी ने बीमा उद्योग से संबंधित मुद्दों पर एक ज्ञान प्रस्तुत करके उनसे मुख्य रूप से जीवन और चिकित्सा बीमा प्रीमियम पर जीएसटी हटाने की मांग की है। श्री गडकरी के अनुसार यूनिवर्सिटी का मानना है कि जो व्यक्ति जीवन की अनिश्चितताओं से अपने परिवार की सुरक्षा के लिए बीमा प्रीमियम और चिकित्सा बीमा प्रीमियम अदा करता है, उस पर यह टैक्स नहीं लगाना चाहिए। जीवन बीमा प्रीमियम पर जीएसटी लगाना जीवन की अनिश्चितताओं पर टैक्स लगाने के समान है। अतः आपसे अनुरोध है कि जीवन और चिकित्सा बीमा प्रीमियम पर जीएसटी वापस लेने के सुझाव पर प्राथमिकता से विचार करें, क्योंकि यह वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक बोझ के समान है। ध्यान रहे कि नेशनल इंजिनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी अकादमी की रिपोर्ट के अनुसार देश के 73 प्रतिशत लोगों के पास चिकित्सा बीमा नहीं है। इतना ही नहीं, देश में चिकित्सा बीमा का प्रीमियम रहना 25 से 30 प्रतिशत लोग अपने चिकित्सा बीमा का नवीनीकरण नहीं करता पाते।

नेशनल इंजिनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी अकादमी की रिपोर्ट के अनुसार देश के 73 प्रतिशत लोगों के पास चिकित्सा बीमा नहीं है। इतना ही नहीं, देश में चिकित्सा बीमा का प्रीमियम 25 से 30 प्रतिशत लोग अपने चिकित्सा बीमा का नवीनीकरण नहीं करता पाते। बुजुर्गों को चिकित्सा बीमा के प्रीमियम के लिए प्रतिवर्ष 12 से 15 हजार रुपये देने पड़ते हैं जो महांग होने के कारण उनके लिए संभव नहीं होता। ऐसे में चिकित्सा बीमा लेने वाले लोगों से प्रीमियम पर 18 प्रतिशत की दर से जीएसटी वसूल करना सरकार के लिए नैतिक दृष्टि से उचित नहीं है। अतः जहां खरां राहत सड़कों पर टोल टैक्स न लेने से वाहन चालकों को राहत मिलेगी, वहाँ चिकित्सा बीमा प्रीमियम पर जीएसटी समाप्त करने तथा दिए हुए प्रीमियम पर आयकर में 100 प्रतिशत छूट देने से लोगों में चिकित्सा बीमा लेने का रुझान बढ़ेगा। इससे उनके स्वास्थ्य में मदद मिलेगी।

अभियान आजाद सिपाही

1984 से 88 तक संयुक्त राष्ट्र में इसराईल के संघटन के रूप में उनके कार्टीकाल ने उन्हें न्यूयॉर्क और कैलिफोर्निया में याहूदियों के साथ अपने संबंधों को बढ़ाने और मजबूत करने में मदद की। तेल अवीव के बाद न्यूयॉर्क में याहूदियों की सभा बड़ी आबादी है और यह दुनिया का सबसे बड़ी आबादी है। अमेरिका ने याहूदियों को एक ऐसी संस्था के रूप में उद्भूत किया है, जो अमेरिका द्वितीय नीति को इसराईल के हितों के साथ जोड़ती है।

इस्राइल के लिए हार के समान होगा युद्धविराम

सङ्केत नक्काश

टारनटो की फिल्म जैगे अनवेंड का क्रूर यथार्थवाद शायद पेट के कमज़ोर लोगों को भी उटारी करता है। अमेरिका के सुदूर दक्षिण में रहने वाला एक श्वेत बागान मालिक अपने तिवारिंग स्मृति में सोचे कर बैठा हुआ 2 मजबूत गुलामों को लड़ते हुए देखता है, दोनों कम से कम तब तक लड़ते हैं जब तक कि उन्हें से एक दूसरे की आंखें नहीं निकाल लेता। बाहर, भड़ियों से भी बड़े आकार के भूखे कुत्तों का एक बूँद एक गुलाम पर छोड़ दिया जाता है जो पेड़ पर चढ़ने की व्यवहार को शिश रखता है।

लीवर जंगल में विलाप करते हुए कहता है, जैसे आवारा लड़कों के लिए मनिक्याद्वारा है, वैसे ही हाम भावान के लिए भी है वे हमें अपने मनोरंजन के लिए मरते हैं। बैंजामिन नेतृत्वात् ने कैपिटल हिल में अमेरिकी कोरेसियों से जो कुछ भी निकलवाया, उनके सामने सभी खड़े होकर तालियों वजाने वाले फैके पड़ गये। वे अपनी सीटों पर कीलों को तरह खड़े होने से नहीं रुक रहे थे। वह पहली बार नहीं है, जो अवधारणा से जो कांग्रेस के संघर्ष सर को अपने पक्ष पर नेतृत्वात् ने कांग्रेस के लिए लिया है।

पेरेज और नेतृत्वात् का उक्साने का एक उद्देश्य अमेरिका को खोई प्रतिष्ठा वापस दिलाना था। इसके विपरीत हुआ है। दुमारियापूर्व कारणों से जो बाइडेन को बाहर होना पड़ा। पुतिन, शी जिनपिंग के भरोसेमंद हाथों को थामे हुए, एक वैश्विक राजनेता के रूप में प्रशंसनीय लग रहे हैं, दोनों जी-7 से आगे ब्रिक्स का रास्ता तय कर रहे हैं।

पेरेज और नेतृत्वात् का उक्साने का साथाकार लिया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नेतृत्वात् अपने अमेरिकी प्रतिष्ठान के लिए भी है वे हमें अपने मनोरंजन के लिए मरते हैं। बैंजामिन नेतृत्वात् ने कैपिटल हिल में अमेरिकी कोरेसियों से जो कुछ भी निकलवाया, उनके सामने सभी खड़े होकर तालियों वजाने वाले फैके पड़ गये। वे अपनी सीटों पर कीलों को तरह खड़े होने से नहीं रुक रहे थे। वह पहली बार नहीं है, जो अवधारणा से जो कांग्रेस के संघर्ष सर को अपने पक्ष पर नेतृत्वात् ने कांग्रेस के लिए लिया है।

1984 से 88 तक संयुक्त राष्ट्र में उक्साने के मामले में विस्तृत चर्चिल के रूप में उनके कार्यकाल ने उन्हें न्यूयॉर्क और रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। एक बार राष्ट्रपति है एक बार तालियों वजाने वाले अवधारणा के लिए एक व्यक्तिक, प्रधानमंत्री नेटवर्क मिला, जिसे उन्होंने कहीं मेहनत से विकसित किया है।

पेरेज और नेतृत्वात् का उक्साने का साथाकार लिया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नेतृत्वात् अपने अमेरिकी प्रतिष्ठान को बाकी सभी साथांशों में लॉकी वे जाल किये गए हैं। सैन्य स्टीक्टर और असामायी के चापलूपी के प्रतिष्ठान के लिए एक असामाय महाशक्ति द्वारा प्रोत्साहित भी किये जायेंगे। रक्षा सचिव कैसर वेनवर्फर की इसराईल को संस्थापक शाह सज्जद ने शीत युद्ध के संदर्भ में सुरक्षा की गारंटी के बदले में अरब तेल को पांचम द्वारा कैसे सांझा किया जायेगा। इस पर समझौतों की पुष्टि करने के लिए स्वेच्छ नहीं व्यूएसप्स पर मुलाकात की थी।

भविष्य का अग्रदूत है। सभी पिछले विवास इसराईल के आत्मविश्वास का परिणाम थे। इसराईल जानता था कि उसके नेतृत्वात् ने जन्मने नजरअंदाज कर दिये स्टीक्टर और असामायी के चापलूपी एक मात्र महाशक्ति द्वारा प्रोत्साहित भी किये जायेंगे। रक्षा सचिव कैसर वेनवर्फर की इसराईल को संस्थापक शाह सज्जद ने हाल ही में रुक्काम वाले अवधारणा के लिए बहतर

पर एक भौतिक कार्य इसराईल लॉकी के लिए एक असामाय का चापलूपी विवास नीति बताता है कि अमेरिकी प्रतिष्ठान को बाकी सभी शाखाओं में लॉकी वे जाल किये गए हैं। सैन्य के अवधारणा की तरह असामायी और लॉकी का एक असामाय महाशक्ति द्वारा प्रोत्साहित भी किये जायेंगे। रक्षा सचिव कैसर वेनवर्फर की इसराईल को संस्थापक शाह सज्जद ने शीत युद्ध के संदर्भ में सुरक्षा की गारंटी के बदले में अरब तेल को पांचम द्वारा कैसे सांझा किया जायेगा। इस पर समझौतों की पुष्टि करने के लिए स्वेच्छ नहीं व्यूएसप्स पर मुलाकात की थी।

जब 1990-91 में शीत युद्ध समाप्त हुआ, तो सुरक्षा नीतीशों के लिए तेल को बानाये रखने के लिए अरबों को डराने के लिए इनी क्रांति, शिवा धूरी, इस्लामी आतंक को लाया गया। इसलिए चीन के दबाव में आकर सऊदी अरब ने तेहरान से हाथ मिलाया है। यह वास्तव में वैश्विक दक्षिण में शामिल हो गया है। यह इसराईल नहीं कर सकता। चीन के इशारे पर, हमास और फतह सहित सभी फिलिस्तीनी समूह युद्ध के अपार्की द्वारा विराम के लिए बहतर

पर एक असामाय का अग्रदूत है। लोग भूल जाते हैं कि सऊदी अरब के साथ अमेरिका के संबंध 1948 में इसराईल के निर्माण से पहले के हैं। 1945 में साप्ताहिक रूपरेखा के बदले असामाय के संस्थानावाहक के लिए एक असामाय एक असामाय महाशक्ति द्वारा प्रोत्साहित भी किये जायेंगे। रक्षा सचिव कैसर वेनवर्फर की इसराईल को संस्थापक शाह सज्जद ने शीत युद्ध के संदर्भ में सुरक्षा की गारंटी के बदले में अरब तेल को पांचम द्वारा कैसे सांझा किया जायेगा। इस पर समझौतों की पुष्टि करने के लिए स्वेच्छ नहीं व्यूएसप्स पर मुलाकात की थी।

जब 1990-91 में शीत युद्ध समाप्त हुआ, तो सुरक्षा नीतीशों के लिए तेल को बानाये रखने के लिए अरबों को डराने के लिए इनी क्रांति, शिवा धूरी, इस्लामी आतंक को लाया गया। इसलिए चीन के दबाव में आकर सऊदी अरब ने तेहरान से हाथ मिलाया है। यह वास्तव में वैश्विक दक्षिण में शामिल हो गया है। यह इसराईल नहीं कर सकता। चीन के इशारे पर, हमास और फतह सहित सभी फिलिस्तीनी समूह युद्ध के अपार्की द्वारा विराम के लिए बहतर

पर एक असामाय का अग्रदूत है। लोग भूल जाते हैं कि सऊदी अरब के साथ अमेरिका के संबंध



फिर सर्वर फेल, नहीं हो सका 'मुख्यमंत्री मंड़ियां सम्मान योजना' के लिए आवेदन

जीप सदस्य राजू मेहता ने किया शिविर का अवलोकन, जतायी नाराजगी

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। झारखण्ड सरकार की महत्वकांडी योजना 'मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना' की शुरूआत हो चुकी है। इस बाबत हुसैनाबाद में शिविर से जगह-जगह शिविर भी लगाया जा चुका है। लेकिन लगातार सर्वर फेल होने के कारण कार्य योजना आगे नहीं बढ़ पा रही है। बताएं चले कि राज्य सरकार इस योजना का लाभ 21 वर्ष से 50 वर्ष की आयु की योग्य महिलाओं को देने के लिए उनके खाते में प्रति माह सीधे 1000 रुपये भेजने वाली है। मुख्यमंत्री दीपंत सोरेन हर गतिविधि की जानकारी अपने सोशल हैंडल के माध्यम से लोगों को दे रहे हैं,



शिविर में कार्यभराने की कोशिश करती महिलाएं।

पहुंच भी रही है। लेकिन किसी भी शिविर में एक दिन में 10 लाखुओं का कार्य भरने की सुचा नहीं मिलती है। क्योंकि नेटवर्क व सर्वर की सम्पत्ति लगातार बढ़ी हुई है। उधर, शिविर को हुसैनाबाद उत्तरी जीप सदस्य राजू मेहता ने अपने भारी संख्या में लाभुक महिलाएं

कर जायजा लिया। उन्होंने बताया कि देवरी कला व देवरी खुद पंचायत में अभी तक साइट्स नहीं खुला है। महिलाएं अपनी दैनिक के चक्कर लगा रही हैं। कहा कि सरकार ने बिना किसी तैयारी के आनन्-फानन में इस योजना को लागू करा दिया। जिसका खामियाजा आम लोग भुगत रहे हैं। कहा कि शिविर में काई अधिकृत अधिकारी या नोडल अधिकारी नहीं हैं और ऑपरेटर के भरोसे सिस्टम को ठीक कराया जा रहा है। वरीं, तरफ भरने की अंतिम तिथि 10 अगस्त है। उन्होंने इस पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि वह लॉलीपॉय जैसी योजना बन कर रह जायेगी।

तकी रिजवी बने हुसैनाबाद इमामबाड़ा के नये मोतवल्ली



हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। तकी रिजवी को हुसैनाबाद बक्फ वसीला बेगम इमामबाड़ा का नया मोतवल्ली बनाया गया है। विदेश से कि गत दिनों हसैनन जैदी ने घेरेलू व्यस्तता का हवाला देकर मोतवल्ली के पद से इसीफा दे दिया था। इसके बाद समाज के लोगों ने बैठक कर अपाले मोतवल्ली का नाम सुझाया। बैठक में उपरित्थ बबूने ने तकी रिजवी का नाम प्रस्तावित किया। जिसका सभी ने नायब किया। जबकि दूसरा नाम अमीन मिर्जा के रूप में आया। लोगों की मंजूरी के बाद उन्हें नायब मोतवल्ली चुना गया। इसलामिक विद्वान हजरत मौलाना सैयद मुस्तफ़ी रज़ा, असरद आलम अब्बास, फिरेज प्यारे हुसैन, गजफर हुसैन अली, मुर्तजा हुसैन रहेन मिर्जा, मिर्जा जावेद, सैयद फजल हुसैन, निहाल मिर्जा आदि ने बधाई दी।

घासीदाग पंचायत के ग्रामीणों ने सड़क की मांग को लेकर किया मुखिया का घेराव



सड़क की मांग को लेकर मुखिया का घेराव करते ग्रामीण।

सड़क के लिए सांसद से लेकर मुख्य सर्वानुसारी ग्रामीणों ने विधायक तक गुहार लगा चुके हैं। सैकड़ों ग्रामीणों ने करीब बो घटे तक मुखिया का घेर दिया। बाद में काफी समझाने वालों के बाद घेराव हटाया गया। इस दौरान ग्रामीण सड़क नहीं तो बोट नहीं का नाम लगा रहे थे। ग्रामीणों का कहना था कि सड़क औंपुल के आधार में घासीदाग पंचायत बरसात में एक टापू की तरह हो गया है। पंचायत का संपर्क प्रखण्ड और जिला मुख्यालय से टूट चुका है। इन्होंने ही नहीं पंचायत के पाचों गांव और सभी टोलों का भी संपर्क पंचायत मुख्यालय से खत्म हो चुका है। इन्हीं लंबी

सड़क के लिए पंचायत के पास अपना कोई मर नहीं है। सूरक्षा निर्माण के लिए पलामू सांसद विष्णु दयाल राम और विधायक रामवंद्र चंद्रवंशी से मिलकर कई बार जापन दिया। मुख्यमंत्री तक से निकलने का कोई रासात होता है तो सांसद विधायक के पात्र ग्रामीणों ने बांहों तक कहा कि अपने पंचायत से निकलने का कोई रासात होता है तो सांसद विधायक के पात्र ग्रामीणों ने आवास घेराव करते हैं। इसके बाद उन्होंने अपने पंचायत के लिए एक कम सकारात्मक लंबी दूरी के बाद घेराव हटाया। इन्होंने अपनी ग्रामीणों को घेराव करते हुए कहा कि वे और

संवेदक की लापरवाही से ग्रामीण परेशान, दरवाजे पर भरा घुटने तक पानी



ने बताया कि सड़क निर्माण के दौरान कुछ ग्रामीणों के इशारे पर

संवेदक द्वारा मनमानी की गई, जो अब परेशानी का सबब बना हुआ है। सूक्ष्म पर जलजमाव के कारण फिसलन उत्पन्न हो गयी है, जिससे वहाँ से अपने जाने वाले फिसल कर गिर रहे हैं। ग्रामीणों ने सप्तस्या का हल निकालने के लिए प्रशासनिक अधिकारियों से गुहार लगाया है।

संवेदक द्वारा मनमानी की गई, जो अब परेशानी का सबब बना हुआ है। सूक्ष्म पर जलजमाव के कारण फिसलन उत्पन्न हो गयी है, जिससे वहाँ से अपने जाने वाले फिसल कर गिर रहे हैं। ग्रामीणों ने सप्तस्या का हल निकालने के लिए प्रशासनिक अधिकारियों से गुहार लगाया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड़ रुपये का बजट तय कर दिया है।

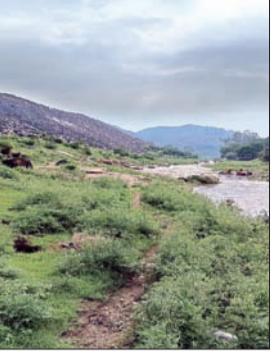
आइसीसी ने चैपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए 544 करोड

નિયમોની અનદેખી વાળોની જાન જોખિમ મંડાલકર કાર્ય કર રહી આઉટસોર્સિંગ કંપનીઓનું

સંયા કુમાર

ધનબાદ (આજાદ સિપાહી)

આઉટસોર્સિંગ કંપનીઓની મનમામી ચરમ પર હૈ। નિયમોની અનદેખી કરનારી ઇનેક્ટ લિએ આમ બાત હૈ એન્યુર્વારા કિ સરસ્યા હોય વાયુ-જલ પ્રદૂષણ ઇન પર કોઈ પ્રભાવ નહીં પડતા। ગરીબોની જીવન તક ખેલવાડી કરને સેપણે નહીં હત્તે। બતાતે ચલે કે એસટેઝી એવં એસેન્ટાર કંપનીઓની ગોપાલીચક મંડિસ્થ હૈ, જે એક-દૂસરી સીમા સેપણી હૈ। ચેલો નિયમોની સેપણીની સંબાલિત કરને કોઈ બાત તો કરતે હૈ, લોકોના નિયમોની કી ઘણિયા ભી હોય લોગ ઉડા રહે હૈનું। બતાતે ચલે કે એસટેઝી આઉટસોર્સિંગ કોન્ટો કાર્ય કરતે નો મહીને સે અધિક કાસમ્ય બીત ચુકા હૈ। દો સાલ કી લોજ પર ઇસ કંપની કો લોજ પર 1709 પેડે



કંપનીની કેબલ સે જુડ્ગિયા નદી ગુજરી હૈ।

જિસમાં લગાતાર બ્લાસ્ટિંગ કે કારણ ટૂટ ગયા થા।

બાંધી, ધર્મેંદ્ર પાસે, સાવિત્રી દેવી, દાની ભુડ્યાં આદિ કિંદી ઘર એસે હૈનું।

જો છેવી બ્લાસ્ટિંગ સે પરેશન હૈ।

બતાતે ચલે કે ઇસ કંપનીની કો

કામ કરતે હુએ હોયાં એક સાલ

બીત ચુકે હૈનું। કંપનીની ભી તીન સાલ કા લીજ મિલા હૈ જિસમાં

8.97 લાખ ટન કોબલા કા

ઉત્તાપ કરાની હૈ। નિયમોની કા દંભ

ભરને વાલી ઇસ કંપનીની કિસી

સે કોઈ સરોકાર નહીં હૈ। મંજરૂ-ગે

રીબોની કે ઘરોં કી શિપિંગ કિ

બાદ તો છેડિંગ ઇસ આઉટસોર્સિંગ

મુાબજા સમઝ રહે હૈનું।

વર્હાની એવં એસેન્ટાર એક

અનુરોધ કિયા ગયા હૈ।

અનુરોધ કરતે હુએ હોયાં એક

સાંચારિક કાર્યક્રમ કે અગલું બગલ

બાંધી 500-600 ઘરોં મંગલ

દાંચાં સે તીન હજાર લોગ નિવાસ

કરતે હૈનું। ઇસ કંપનીની કો

ઘરોં કી શિપિંગ કિ

બાદ તો છેડિંગ ઇસ આઉટસોર્સિંગ

મુાબજા કે લિએ ગાંધીજીયા મં

શિપિંગ કિ બાદ તો છેડિંગ

એવાં એવાં એવાં એવાં

એવાં એવાં એવાં

